चतुर्थ अध्याय :

धर्मवीर भारती के उपन्यासों का उद्देश्य।

4:1 हिन्दी उपन्यास में उद्देश्य का स्वरुप –

उपन्यास के छह तत्व माने जाते है । उस में उद्देश्य उपन्यास का अत्यावश्यक और महत्वपुर्ण तत्व है । उपन्यास निरुद्देश्य नहीं होता है । भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार साहित्य का एक मात्र फल रस या आनंद है । आज के बुध्दिवादी साहित्यिक इसे गौण मानते है । उपन्यास के उत्तरोत्तर विकास के साथ उद्देश्य में विस्तार होने लगा है ।

उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजनके साथ–साथ पाठकों में सुन्दर भावों को जागृत करना होता है । केवल मनोरंजन करने से काम नहीं चलता है । इसलिए उपन्यासकार अपने उपन्यासो में जीवन सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं का उद्घाटन करने का उद्देश्य रखते है । कोई उपन्यासकार यश, अर्थ प्राप्ति तथा स्वान्त सुखाय उपन्यास लिखते है । अतः कसौटी के तौरपर देखा जाये तो उपन्यास उद्देश्य विहीन रचना नहीं है । किसी उदात्त एवं अनुदात्त उद्देश की पृष्ठ भूमि में ही उपन्यास की कला सार्थक बनती है । उसकी सफलता के लिए उपन्यास रोचक और मन को बहलाने युक्त हो । वास्तव में यह उसकी सार्थकता नहीं है । श्रेष्ठ उपन्यास में कहीं कुछ उच्च वस्तु आवश्यक होती है ।

यह उच्च वस्तु मानव जीवन का चित्रण भी हो सकती है और जीवन संदेश भी । ~~पर उपन्यास में संदेश, सकती है और जीवन संदेश भी ।~~ पर उपन्यास में संदेश, परोक्ष रुप में निर्देशित होना चाहिए । संदेश की प्रतयक्षता उपन्यास की कलात्मकता को नष्ट कर देती है । उपन्यास लिखते समय उपन्यासकार को सम सामायिक युगीन परिस्थितीयाँ, तथ्यों तथा समस्याओं का निरुपन करके उनके समाधान की ओर ध्यान देना पडता है ।

आज के उपन्यासों में ज्यादातर विषयवस्तुगांभीर्य और उद्देश्यगत गूढ़ता मिलती है । फिर भी उपन्यासकार को साहित्य सृजन के आकलन की सही दृष्टि अपने पाठकों को जीवन जीने के लिए अनुप्रेरित करना पडता है । इसलिए कलाकृति के सृजन में उद्देश्य का

होना औपन्यासिक कलाकृति की श्रेष्ठता है । इस उद्‌देश्य की पूर्ति करते समय शिल्प तथा भाषा का सुन्दर समन्वय करना उपन्यासकार का धर्म है । साथ ही उपन्यासकार को अपने उपन्यास के माध्यम से पाठकों में समता और सन्मान की भावना विकसीत करनी पडती है । ऐसा करते समय उपन्यासकार में जागृकता, संवेदनशीलता का होना नितांत जरुरी है ।

अतः उपन्यास में उद्‌देश्य अन्तर्निहित होता है । उपन्यासकार इस उद्‌देश्य से मानव जीवन का चित्रण करता है । अपने उपन्यास के द्वारा जीवन संदेश भी देता है । वह समाज की समस्याओं का चित्रण करके, उनका निमुर्लन करना चाहता है ।

4:2 "धर्मवीर भारती" के उपन्यासों का उद्देश्य

प्रास्ताविक –

"गुनाहों का देवता" में युवाकालीन प्रणय भावना का वास्तव चित्रण दिखायी देता है। इस उपन्यास में आदर्श प्रेम को एक ढंग में चित्रित किया है । "सूरज का सातवाँ घोडा" में निम्न–मध्य वर्गीय प्रेम के सहारे जीवन की सचाई का चित्रण किया है । इसमें "गुनाहों का देवता" के समान एकांतिक प्रेम नही है बल्कि व्यापक सामाजिक सत्य को प्रतिबिम्बित किया है ।

धर्मवीर भारती जीने निम्न–मध्यवर्गीय समाज के प्रेम के माध्यम से समाज की समस्याओं का चित्रण किया है । वे इस समाज के गुण–दोषों के साथ उस समाज की बदल ती परिस्थितीसे अवगत कराते है । वे हमेशा इन उपन्यासो में समाज हित को केन्द्र बिन्दु बनाते हैं । वे युवा–युवतीओं के प्रेम का चित्रण करते वक्त स्वंय भोगे हुए जीवन के तथ्यों से उसका तालमेंल लगाते है । अतः वे पाठकों को जीवन की सही व्याख्या से परिचीत कराते है और अपना इच्छीत उद्देश्य या विचारधारा का प्रचार, प्रसार करते है ।

4:2:1 नर–नारी के नैतिक–अनैतिक सम्बन्ध स्पष्ट करना ।

उपन्यासकारने पात्रों के माध्यम से नर–नारी के नैतिक–अनैतिक सम्बन्धको छूने का सफल प्रयास किया है । इन सम्बन्धों के बिना मानव का जीवन असफल तथा निरर्थक लगता है । अतः इन सम्बधों का विस्तृत परिचय कर लेना आवश्यक है ।

4:2:1:1 नैतिक सम्बन्ध

इस सृष्टि में मनुष्य की उत्पत्ति नर–नारी के सम्बन्धोंपर निर्भर रहती है । नर–नारी एक–दुसरे के सहयोग के बिना नही रह सकते है । नर–नारी उचीत उम्र में आते ही अनायास एक–दूसरे के प्रति आकृष्ट होते है । इसका कारण है –

अब नर–नारी में सेक्स की भुख पैदा हो गयी है । जिसप्रकार मनुष्य को जीवित रहने के लिए उसे भोजन या पानी की जरुरत होती है । उसीप्रकार नर–नारी की कामवासना तृप्त होना भी जरुरी होता है । यह कार्य समाज या धर्म का होता है । अगर समाज उनकी यह सेक्स की भुख पूरी करने में असमर्थ रहे, तो थोडे ही समय में समाज पतन की ओर जायेगा । इसलिए पुरष–स्त्री की कामवासना तृप्त करना समाज और धर्म का परमकर्तव्य होता है । समाज यह कार्य उन दोनों के विवाह से करता है । अतः दो विषम लिंगी व्यक्ति स्वेच्छा से मिलकर, सामाजिक मान्यता और धार्मिक संस्कारपुर्वक यौण सम्बन्ध रखते है । इस यौण सम्बन्ध को "नैतिक सम्बन्ध" कहते है । इस नैतिक सम्बन्ध में दाम्पत्य सम्बन्ध और प्रेम संम्बन्ध आते है ।

(अ) दाम्पत्य सम्बन्ध –

दाम्पत्य सम्बन्ध" दो विषमलिंगी व्यक्तियों का संगम है । भारतीय संस्कृतिमें पति–पत्नि की परस्पर एकनिष्ठता को दाम्पत्य जीवन के लिए महत्वपुर्ण समझा जाता है । इस दाम्पत्य सम्बन्ध में पति–पत्नी एक साथ जीवन भर रहते है । दुनिया में सभी रिश्तें स्त्री–पुरुषों से संलग्न है । लेकिन दाम्पत्य जीवन में पति–पत्नि को ही सुखमय जीवन जीने के लिए समाज की मान्यता है । इस गृहस्थी जीवन में पति अर्थोर्जन करता है, तो पत्नी भोजन करके घर और संतान की देखभाल करती है । इसमें न पत्नी पतिसे (दिन) है और न पति पत्नी से श्रेष्ठ है । यह उज्जल दाम्पत्य जीवन की कल्पना पुरुष प्रधान संस्कृति में परिवर्तीत होती है । धर्मकंटकोने धन लोलुप वृत्ति के कारण धर्म और नैतिकता के सारे बंधन स्त्रियोंपर लाद दिए गये ।

धर्म के नामपर स्त्री को विधवा विवाह करना, पाप समझा जाने लगा । स्त्री की शिक्षा को भी गौण रुप प्राप्त हो जाता है । इन बंधनों

के कारण नारी जीवन चार दिवारो में बंद होता है । तो पुरुष स्वंतत्र और स्वेच्छाचारी बनता है ।

दाम्पत्य सम्बन्ध में पत्नी का अवैध यौण सम्बन्ध रखना पाप समझा जाता है । नारी की आस्था एक ही पुरुष में होना जरुरी है । जब इस आस्था में भेद निर्माण होता है, तब दाम्पत्य सम्बन्ध दु:खमय होता है ।

धर्मवीर भारती के उपन्यासोमें दाम्पत्य सम्बन्ध दुख:मय बना है । इन दाम्पत्य सम्बन्धोमें टुटन, बिखराव का रुप दिखायी देता है । "गुनाहों का देवता" में सुधा–कैलाश का दाम्पत्य सम्बन्ध दु:खमय होता है । इसका कारण है – सुधा तन से कैलाश की है, लेकिन उसका मन प्रेमी– चन्दर की तरफ है । कैलाश अपनी पत्नी को हरहाल में सुखी रखना चाहता है । अपने पति के घर में सबकुछ आजादी होने पर भी वह खुश नहीं है । वह दिन–ब–दिन पीली पड जाती है । वह प्रायश्चित के रुप में पूजा, पाठ, उपवास करती है । – – – उपन्यास के अंत में वह "एबार्शन" से मर जाती है । कैलाश अपनी पत्नी को मरते समय देख भी नहीं सकता है अत: कैलाश–सुधा का दाम्पत्य जीवन दु:खमय होता है ।

गुनाहों का देवता" में पम्मी भी अपने पति को छोडकर आयी है । पम्मी और उसके पति के दाम्पत्य जीवन में अन्तर आया है । "सूरज का सातवाँ घोडा" में भी दाम्पत्य सम्बन्ध के उदाहरण दिखायी देते है । जमुना का विवाह बूढ़े पतिसे होता है । एक साल में ही उसका पति मर जाता है जमुना को बेटा होता है, उसके साथ अपना उर्वरित वैधव्य जीवन बिताती है । उसी प्रकार तन्ना और लिली का दाम्पत्य जीवन भी टूट जाता है । लिली अपने बिमारग्रस्त पति को छोडकर मायके जाती है ।

अत: भारतीजी के दोनोंही उपन्यास में दाम्पत्य सम्बन्ध दु:खमय,

बिखरे हुए देखने को मिलते है । आज के समाज में भी ऐसे दाम्पत्य जीवन कई उदाहरण दिखायी देते है ।

(ब) प्रेमसंम्बन्ध –

भारतीजी के दोनों ही उपन्यास "प्रेम सम्बन्ध" पर आधारित है । उपन्यासों के सभी पात्रों का केन्द्र बिन्दु है – प्रेम । यह प्रेम कहीं आदर्श तो कहीं यथार्थ की धरातलपर पहुँचता है । उपन्यासों के सभी पात्र "प्रेम सम्बन्ध" में असफल हुए है ।

"गुनाहों का देवता" में चन्दर और सुधा के प्रेम सम्बन्धों की कहानी है । दोनों का एक दुसरे के प्रति एकनिष्ठ प्रेम है । यह एक आदर्श प्रेमसंम्बन्ध का उदाहरण है । यह प्रेम सम्बन्ध शिशे के समान टूट जाता है । सुधा की शादी कैलाश से होती है, जिस से दोनों को एक–दुसरे के बिना जीना मुश्किल होता है । अतः दोनों ही टूट जाते है, एकाकी होते है । जैसे सुधा बोली – "चन्दर, चुप क्यों हो ? अब तो नफरत नहीं करोगे ? मैं बहुत अभागी हूँ, देवता ! तुमने क्या बनाया था और अब क्या हो गयी !.... देखो अब चिट्ठी लिखो तो रहना । नहीं तो सहारा टूट जाता है ....." और फिर वह रों पड़ी ।"[1]

अंत में सुधा की मृत्यु होती, जिससे इस प्रेम सम्बन्ध दुःखान्त बन जाता है।

बिनती भी चन्दर से प्रेम सम्बन्ध रखती है । अपनी दीदी के ससुराल जाते ही अपने स्नेह से चन्दर का मन जीत लेती है । अंत में यह प्रेम सम्बन्ध विवाह में परिणत होता है ।

इसी प्रकार "सुरज का सातवाँ घोडा" में प्रेमसंबन्ध के कई उदाहरण मौजुद है । नायक माणिक जमुना, लिली और सत्ती इन तीनों युवतियों के प्रेम में निष्फल होता है ।

तन्ना–जमुना का प्रेम सम्बन्ध विवाहबध्द होने में दहेज का अभाव और उँच–नीच का भेदभाव कारण बन जाता है । इसका परिणाम यह होता है कि– तन्ना की शादी लिली से और जमुना का विवाह एक बुढ्ढे पतिसे होता है । अंत में दोनों का वैवाहिक जीवन दु:खमय होता है ।

दोनों ही उपन्यासों के प्रेम सम्बन्ध असफल, और टूटे हुए दिखायी देते है । मध्यवर्गीय समाज में इस प्रेम संम्बन्ध का प्रतिबिम्ब झलकता है । उपन्यासकारने प्रेम सम्बन्ध विवाहबध्द न होने से जीवन किस प्रकार दु:खमय होता है । इस की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है ।

4:2:1:2 अनैतिक सम्बन्ध –

भारतीय समाज में पत्नी का विवाहोत्तर योण सम्बन्ध अनैतिक माना है । भारतीय संस्कृति में पति के होने न होने पर भी पत्नी को पति के प्रति एकनिष्ठ रहना पड़ता है । पति–पत्नी में जब यौण सम्बन्ध के बारे में अविश्वास पैदा होता है । तब उनके जीवन में संघर्ष का निर्माण होता है । जिससे उनका जीवन अलग होता है, टूट जाता है ।

एक शोध छात्र के नाते मुझे इस व्यवस्था में दोष दिखायी देता है । यदि पति पत्नी की कामवासना तृप्त करने में असमर्थ है, या उसमें पुरुषत्व के लक्षण नही है। तो हताश होकर पत्नी अन्य पुरुष के साथ यौण सम्बन्ध रखती है । समाज, धर्म इस यौण सम्बन्ध को अनैतिक मानता है । वास्तव में यह "यौण सम्बन्ध" अनैतिक नही है । दुसरे यदि पति उसकी कामवासना तृप्त करने में समर्थ है । इस स्थिति में अगर पत्नी अन्य पुरुष के साथ यौण सम्बन्ध रखती है । तो इसे अनैतिक सम्बन्ध कहना उचित है । भारतीजी के उपन्यासों में दोनों उदाहरण दिखायी देते है ।

(अ) दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध –

"गुनाहों का देवता" में प्रमिला नामक युवती विवाहबध्द है । पम्मी अपने पति के होते हुए भी वह चन्दर के साथ यौण सम्बन्ध रखती है । वास्तव में उसका पति उसकी कामवासना तृप्त करने में समर्थ है । फिर भी अन्य पुरुष से यौण सम्बन्ध रखना अनैतिक सम्बन्ध है ।

"सुरज का सातवाँ घोडा" में जमुना का विवाह बुढ़े पति से होता है उसका पति बूढा है, जमुना जैसी तरुण युवती की कामवासना तृप्त करने में में वह असमर्थ है । अतः जमुना निराश होकर नौकर रामधन के साथ दाम्पत्येत्तर यौण सम्बन्ध रखती है । लेकिन वास्तव में यह जमुना का अनैतिक सम्बन्ध नही है ।

अतः धर्मवीर भारतीजी के दोनों उपन्यासोमें दाम्पत्येत्तर सम्बन्धों का खुलकर उदघाटन हुआ है । इसमें पम्मी और जमुना का दाम्पत्येत्तर समाजमें इसके उदाहरण दृष्टव्य है ।

4:2:2 निम्न मध्यमवर्गीय समाज का यथार्थ रुप दिखाना –

उपन्यासकार भारतीने अपने इन दो कृतियोंमें निम्न मध्यमवर्ग समाज का अंकन किया है । "गुनाहों का देवता" मे मध्यमवर्गीय जीवन के विविध रंग दिखायी देते है । "गुनाहों का देवता" उपन्यास व्यापक सत्य से पूर्णतः निरपेक्ष घोर व्यक्तिवादी दृष्टिका उपन्यास है, तो "सुरज का सातवाँ घोडा" सामाजिक सत्य कों विवेच्य विषयवाला उपन्यास है ।

निम्न–मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण करने के लिए भारतीजी ने दोनों उपन्यासोमें प्रेम कहानियोंका सहारा लिया है । इन दोनों उपन्यास की प्रेम कहानियोंमें काफी अन्तर है । गुनाहों का देवता स्वच्छन्छतावादी रचना है तो "सूरज का सातवाँ घोडा" अपेक्षाकृत यथार्थवादी रचना है । लेखक जोसफ कहते

है– "गुनाहों का देवता" की कथा भावभीनी अश्रु–सिचित तथा माधुर्य– मंडित है । इसके विपरीत सूरज का सातवाँ घोडा मध्यवर्गीय समाज की विंडबनाओं – विकृतियों का यथार्थ पुर्ण और व्यंग्य पुर्ण अंकन करता है । दोनों कृतियों में मध्यवर्ग के नायक को आधार बनाकर उसके प्रेम और विकृति को चित्रित किया गया है ।"[2]

"गुनाहों का देवता" की स्वप्निल प्रेम कहानी का परित्याग करके यथार्थ की स्वप्न भंग करनेवाली ठोस धरतीपर दूसरा उपन्यास उतर पड़ा है । अर्थ और काम की धूरी के इर्द–गीर्द घूमनेवाले निम्न–मध्यवर्गीय जीवन का विडम्बनात्मक चित्रण करना भारती का उदेदश्य रहा है । लेखक प्रेम प्रकाश गौतम 'गुनाहों का देवता' के बारे में कहते है – "आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व के मध्यवर्गीय शिक्षित समाज का उपन्यास में जीवंत चित्रण है । परन्तु उपन्यास है- व्यक्तिवादी ही, सामाजिक यथार्थवाद से काफी दूर ।"[3]

भारती की दो कृतियाँ व्यक्तिवाद पोषक रचनाएँ है । मध्यमवर्ग के समाज का चित्रण इन में है, सामाजिक चेतना का समावेश भी दिखायी देता है । डॉ. कैलाश जोशी, "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास के सन्दर्भ में कहते है कि – "सचाई, जीवन की एक गहरी सचाई का चित्र यहाँ दार्शनीय है । निम्न–मध्यमवर्ग की सचाई का चित्र यहाँ जीवित होकर साँसे लेता है । बाहरी और भीतरी दोनों ही जीवनों के चित्र वहाँ मूर्त है ।"[4]

उपन्यास के सभी पात्र मध्यवर्ग से ही लिए है । केवल सत्ती जैसा एकमेव पात्र निम्नवर्ग से लिया गया है । दोनों ही उपन्यास में मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं का उद्घाटन किया है । साथही इस समाज का खोखलापन, दिखावटी प्रतिष्ठा को भी दिखाया है ।

4:2:3 नारी–शिक्षा का उद्घार करना ।

पहला उपन्यास सन 1949 ई में तो दूसरा सन 1952 ई में लिखा गया है।

इस समय हमारा देश आजाद होकर चार पाँच साल हो गये थे । इस समय नारी–शिक्षा का इतना महत्व नहीं था । नारी को उँची शिक्षा लेना गलत या पाप समझा जाता था । नारी शिक्षा लेकर क्या करें– इस प्रकार की राय समाज की थी । सिर्फ शहर की लडकियाँ शिक्षा लेती थी । देहात की लडकियाँ नाममात्र शिक्षा लेकर पढाई बंद करती थी ।

उपन्यासों के नारीपात्र – सूधा, पम्मी, गेसू, बिनती जमूना, लिली आदि नारी शिक्षा पर प्रकाश डाला है । सूधा और गेसू ही बी.ए. तक उच्च शिक्षा ले रही है । बिनती अपना विदूषी का खण्ड देने के लिए देहात से प्रयाग आती है । लडकीयाँ यूनिवर्सिटी पढ़ने नहीं जाती क्योंकि वहाँ लडके पढते है । लड़कियाँ कॉलेज में ही पढ़ने जाती है । यह कॉलेज सिर्फ लड़कियों का ही होता है । उससमय लड़का–लड़की साथ पढ़ना अच्छा नहीं समझा जाता था । परन्तु लडकियाँ जहाँ पढ़ती है, वहाँ ठीकतरह से पढ़ाया नही जाता है । गेसू इस सन्दर्भ में कहती है – "असल बात तो यह है कि, कॉलेज में पढ़ाई नही होती । इससे अच्छा सीधे युनिवर्सिटी में बी.ए. करते तो अच्छा था । मेरी तो अम्मी ने कहा कि – "वहाँ लड़के पढ़ते है, वहाँ नही भेजूँगी ।"[5]

सारांश उपन्यास में नारी पात्र सुशीक्षित दिखाई देते है । उपन्यासकार आज की नारी को अज्ञान के अंधकार से दूर होकर ज्ञान के प्रकाश में रहने के लिए प्रेरित करता है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" में "गुनाहों का देवता" के समान जादा पढ़ी–लीखी नारी पात्र नहीं है । इस उपन्यास में जमुना जैसी लड़की की शिक्षा उचीत रुप में नहीं होती है । उसे शिक्षा और मनबहलाव के नामपर मिली, मीठी कहानीयाँ, "सच्ची कहानियाँ" । लिली जैसी एकमेंव स्त्री पात्र शिक्षित है । सत्ती अशिक्षित निम्न समाज की लड़की है ।

उपन्यासकार नारी शिक्षा को महत्व देते है । वे समझते है कि– "नारी

जब तक शिक्षा नहीं ले गी तबतक उस पर अन्याय होता रहेगा । उसे अपने हक्क नहीं मिलेगें । नारी शिक्षा लेकर वह पुरुष के बराबर हर क्षेत्र में काम करेगी । अपना नाम रोशन करेगी । नारी शिक्षा से ही देश की सर्वांगीण प्रगती होती है ।

4:2:4 रुढी–परम्पराओंपर व्यंग्य करना ।

हमारे देश में अनेक जाति–उपजातियाँ देखने को मिलती है । हर एक जात अपने धर्म के नियम के अनुसार चलती है । उसे अपने-अपने धर्म–संस्कृतिपर नाज है । वह अपनी जात के रुढी, रस्म, रिवाजों को महत्व देती है । हर–एक आदमी अपने जात–धर्म के रीवाजों का अच्छी तरह से पालन करता है । हर एक जाती का आदमी अपने धर्म पर गर्व करता है ।

भारतीजीने अपनी दोनों कृतियों में जाति प्रथा, रुढी परम्पराएँ, रीतिरस्मों, उँच–नीच की भावनाओं आदि का चित्रण किया है ।

गुनाहों का देवता में डॉ.शुक्ला अपनी बेटी की शादी बिरादरी में करना चाहते है । वे कहते है – "मै खुद सुधा का ब्याह अब टालना नहीं चाहता । बी.ए. तक की शिक्षा काफी है, वरना हमारी जाति में तो लड़के नहीं मिलते ।"[6] डॉ.शुक्ला जो जातिवाद के पक्षपाती है, सुधा की शादी के बाद जब वे सुधा की हालत देखते है । सुधा की शादी अच्छी जगह पर करने पर भी वह पीली पड जाती है । और बिनती की शादी तीन बार तय होने पर भी टूट जाती है । इससमय वे जाति प्रथाओं का तिरस्कार करते है । वे कहते है– "सचमुच जाति विवाह सभी परम्पराएँ बहुत बुरी है । बुरी तरह सड़ गयी है । उन्हें तो काट फेंकना चाहिए । मेरा तो वैसे इस अनुभव के बाद सारा आदर्श बदल गया ।"[7] वे बिनती की शादी दूसरी बिरादरी में करना चाहते है । इस समय वे चन्दर से कहते हैं – "चन्दर तुम कोई गैर जात का अच्छा सा लड़का ढूँढो । मै बिनती की शादी दुसरी बिरादरी में कर दूँगा ।"[8]

उपन्यासकार विवाह संस्थाओं पर भी व्यंग्य करते है । वे सामाजिक

संस्थाओं को स्वर्ग की उँचाई से धरती के किचड फेंक देते है । समाज में विवाह तय करते समय अनेक रीति–रस्मों का अनुकरण होता है । उपन्यास में बिनती का विवाह पाँच रुपये का नोट लेकर तय होता है । उपन्यासकार इसका विरोध अपने बुआ पात्र के माध्यम से करते है । बुआ पाँच रुपये का नोट देखकर क्रोधित होती है। बुआ कहती है– "न गहना, न गुरिया, बियाह पक्का कर गये ई कागज के टूकडे से । अपना–आप तो सोना और रुपिया और कपडा सब लीलै को तैयार और देत के दाँई पेट पिराता है, जूता–पिटऊ का । अरे राम चाही तो जमदूत ई लहास की बोटी–बोटी करके रामजी के कुत्तन को खिल इ है ।"[9]

सूरज का सातवाँ घोडा" में विवाह तय करते समय उँच–निच का भेदभाव दिखायी देता है । उपन्यास की नायिका जमुना का विवाह टूट जाता है क्योंकि तन्ना नीचली गोत्र का लड़का है । उपन्यास का प्रमुख पात्र– माणिक निम्न समाज की सत्ती के साथ ब्याह करना उचित नहीं समझता क्योकि– सत्ती निम्न तथा नीचे गोत की लड़की है । यह जातिभेद का रुप दिखायी देता है । समाज में जब तक उँच नीच की भावना है, तब तक समाज की उन्नति नहीं होगी । यहाँ उपन्यासकारने रुढ़ी परम्पराएँ जाति प्रथाएँ की व्यर्थतापर व्यंग्य किया है ।

4:2:5 युवाँ– युवतियों के रोमानी पीड़ा का बोध देना ।

दोनों ही उपन्यास में युवक–युवतियों के प्रणयभाव, रोमानी पीड़ा, यौण आकर्षण आदि रुप दिखायी देते है । दोनों ही उपन्यास के नायक चन्दर और माणिक अनेक लड़कियों से साहचर्य पाते है । इसमें वे अतृप्त रह जाते है । इसीप्रकार उपन्यास के बहुतांश पात्र इसके शिकार हो जाते है । चन्दर की शादी सुधा से नहीं होती उसीप्रकार गेसू का ब्याह अपने प्रेमी अख्तर से नही होता है । बर्टी की प्रेयसी – सार्जन्ट के साथ भाग जाती है । जिससे वह पागल होता है । बिनती का ब्याह भी टूट जाता है । पम्मी अपने पतिको सुख देती है, न प्रेमी चन्दर को सुख देती है । इसप्रकार उपन्यास के सभी पात्र कामवासना की पूर्ति के अभाव से टूट चुके है ।

उसीप्रकार सूरज का सातवाँ घोडा में नायक माणिक, जमुना, लिली, सत्ती से प्रेम करता है । इसमें उसे असफलता ही मिलती है । जमुना तन्ना से प्रेम करती है, लेकिन उसका विवाह उससे नहीं होता है । लिली न अपने पति तन्ना से संतुष्ट है न अपने प्रेमी माणिक से संतुष्ट है । सत्ती का प्रेम भी अधूरा रह जाता है ।

इसप्रकार मध्यवर्ग के युवक–युवतियों का काम जीवन भी विकृतियों से भर गया है । उपन्यास के बहुताश पात्र अपने आन्तरिक पीडा, प्रणय भाव की अतृप्ति के कारण उदास दिखायी देते है । उपन्यासों के दोनों नायकों की रोमानी, पिड़ा और मनःस्थिति का जो चित्रण है । यह स्वयंम उपन्यासकार का भोगा हुआ जीवन है । आज भी समाज में ऐसे अनेक युवा–युवतियाँ दिखायी देती है ।

4:2:6 समाज की समस्याओं से परिचित करना ।

मनुष्य के जन्म के साथ–साथ समस्याओं का भी जन्म हुआ । जब मनुष्य प्राचिन काल में अप्रगत अवस्था में था । तब मनुष्य प्रश्न के घेरे में इतना उलझा हुआ नहीं था । किन्तु जैसे–जैसे वैज्ञानिक अनुसन्धानोंने जन्म लिया । तब धीरे–धीरे विकास होने लगा वैसे समस्याएँ भी बढ़ती चली गई । आज मनुष्य अति प्रगत बन गया है । उसे विविध प्रश्न और जटिलताएँ मनुष्य को खोखला बना रही है । इन समस्याओं ने व्यक्तिको बाहय रुप में ही नहीं बल्कि अन्दर से ही झकझोर दिया है । व्यक्ति या समाज को समस्याएँ सुलझाना कठिण हो रहा है । अगर धीरे–धीरे समस्याएँ बढ़ती जायेगी, तो वह व्यक्ति के विकास में बाधक होगी । अतः इन समस्याओं का उच्चाटन करना आवश्यक है । धर्मवीर भारतीजी के उपन्यासों में अनेक समस्याओं ने जन्म लिया है । इन समस्याओं में प्रेम समस्या, आर्थिक समस्या, वैवाहिक समस्या, भुखमंगो की समस्या तथा शिक्षा की समस्या आदि । यह समस्याएँ निम्न–मध्यवर्ग की है ।

प्रेम समस्या –

दोनों ही उपन्यासो में प्रेम समस्या का चित्रण हुआ है । इन के पात्र प्रेम

के शिकार हो गये है । चन्दर, सुधा का जीवन "प्रेम" से जुड़ा हुआ है । बर्टी जैसा पात्र प्रेम की चोट खाया हुआ है । गेसू की अलग प्रेम समस्या है । बिनती के दिल की धडकने "प्रेम" के नामपर उदास है । अतः यह उपन्यास प्रेम समस्या से अच्छादीत है । भारती के दूसरे उपन्यास में "प्रेम" एक तिखी समस्या के रुप में आया है । उपन्यास के माणिक प्रेम ने अतृप्त रह जाते है । तब अन्य पात्रों मे तन्ना, जमुना, लिली, सत्ती प्रेम समस्या के अभिन्न अंग है ।

आर्थिक समस्या –

"अर्थ" प्रारंभ से ही जीवन का विधायक तत्व है । दोनों ही उपन्यासो में आर्थिक समस्या का बोलबाला होता है । चन्दर की शिक्षा शुक्ला के आर्थिक सहायतासे होती है । जमुना की शादी दहेज के अभाव में तन्ना से नहीं होती है । जैसे उपन्यासकार के शब्दो में– "जमुना के पिता बैंक में साधारण क्लर्क मात्र थे और तनख्वाह से क्या आता–जाता था तीज–त्यौहार, मूंडन–देवकाज में हर साल जमा रकम खर्च करनी पड़ती थी । अतः जैसा हर मध्यम श्रेणी के कुटूंब में पिछली लडाई में हुआ है, बहुत जल्दी सारा रुपया खर्च हो गया और शादी के लिए कानी कौडी नहीं बची ।"[10] निम्न वर्ग की सत्ती को अर्थ के अभाव के कारण साबुन बिकने का काम करना पडता है । अतः दोनों ही उपन्यासोमें आर्थिक विषमता दिखायी देती है ।

वैवाहिक समस्या –

विवाह से अनेक भावात्मक तथा दैहिक आवश्यकताओंकी पूर्ति भी होती है । विवाह से दो विषम लिंगी व्यक्ति मिलकर, समाज और धर्म की मान्यता लेकर यौन संबंध और व्यक्तित्व विकास करते है । धीरे–धीरे विवाह जैसे पवित्र संस्कार में अनेक समस्याओंने जन्म लिया है । इन समस्याओमें अनमोल विवाह से विधवा समस्या का जन्म हुआ है । साथ ही दहेज समस्या, परिवार के बिखराव एवं टूटन की समस्या आदि समस्याओंने अपना उग्र रुप धारण किया है । धर्मवीर भारती के उपन्यासों में प्रस्तुत समस्याएँ चित्रित है ।

जमुना का अनमेल विवाह होता है । एक वर्ष में ही उसका पति मर जाता है । वह विधवा बन जाती है । बिनती की माँ भी एक विधवा स्त्री है । लिली की माँ भी विधवा स्त्री है । उपन्यासकारने विधवा समस्या का चित्रण किया है । जमुना के घरवाले इच्छीत दहेज देने में असमर्थ है । इसलिए जमुना की शादी तन्ना से नहीं होती । अतः अनमेल विवाह के मुल में दहेज प्रथा और आर्थिक निर्धनता प्रमुख रही है । दोनों ही उपन्यासोंमें ग्रहस्थी जीवन में बिखराव एवं टूटन का रुप दिखायी देता है । जैसे कैलाश और सुधा, तन्ना और लिली का ग्रहस्थी जीवन टूट चुका है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" में भुखमंगो की समस्या चित्रित है । निम्न वर्ग सत्ती और चमन ठाकुर उपन्यास के अंत में भिख माँगते दिखायी देते हैं ।

दोनों ही उपन्यासो में शिक्षा की समस्याएँ भी मोजुद है । इसका उल्लेख मैने "नारी शिक्षा का उध्दार" में किया है ।

उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों में समस्याओंका उल्लेख किया है । यह समस्या मध्यमवर्गीय समाज की है । इन समस्याओं के पीछे अंधश्रध्दा, अशिक्षा ही कारण बनती है । लेखक ने परीणाम की ओर हमारा ध्यान आकृष्ठ किया है । अतः वे इन समस्याओं का निर्मुलन करना चाहते है ।

4:2:8 अंधश्रध्दा का निमुर्लन करना ।

भारतीय समाज में धार्मिक आडम्बरों के साथ–साथ अंधविश्वासों का भी साम्राज्य फैला हुआ है । जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार की अंधश्रध्दा पायी जाती है । समाज प्रगति में यह बाधक है अतः इन का निर्मुलन करना आवश्यक है । धर्मवीर भारतीने अपने उपन्यासोंद्वारा "असगुन" तथा "ज्योतिषी" सम्बन्धी अंध विश्वासों का विराध करने का प्रयास किया है ।

धर्मवीर भारती के दोनोंही उपन्यास में इस अंधविश्वास के उदाहरण दिखायी

देते है । "गुनाहों का देवता" में गौण पात्र बिनती अंधश्रध्दा का शिकार बनती है । बिनतकी के जन्म समय उसके पिता की मृत्यु होती है । उसीप्रकार उसका विवाह तीन बार तय होने पर भी टूट जाता है । इन घटनाओं के कारण बिनती को अशुभ समझा जाता है । उसे अपनी माँ और समाज से लांछना प्रताड़ना ही मिलती है । उसकी माँ उसे हरवक्त गालियाँ देती है । वह कहती है – "पैदा करत बखत बहुत अच्छा लाग रहा, पालन बखत टेंबोल गये । मर गये रहयो तो आपन सन्तानौ अपने साथ लै जात्यौ । हमारे मुड पर ई हत्या काहे डाल गयौ । ऐसी कुलच्छनी है कि पैदा होते दिन बाप को खाय गयी ।"[11] इसमें निष्पाप बिनती का दोष नहीं है । इसमें दोष है– अशिक्षित समाज की अंधश्रध्दा का ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" में यह अंधश्रध्दा जमुना के संतान प्राप्ति के सम्बन्धी उपाय--योजना में दिखायी देती है । जमुना का ब्याह एक बूढ़े पति तेहाजु से होता है । उसे अपने पतिसे संतान प्राप्ति मिलना असंभव होता है । अतः हताश होकर जमुना ज्योतिषी के पास जाती है । उसे ज्योतिषी उपाय बताता है–"उसे कार्तिक भर सुबह गंगा नहाकर चण्डीदेवी को पीले फूल ब्राहमणों को चना, जौ और सोने का दान करना चाहिए ।"[12] इस अनुष्ठान से कुछ फल न मिलने की आशा देखकर जमुना दु:खी हो जाती है । उस समय नौकर रामधन उसे बताता है । जैसे– "जिस घोड़े के माथेपर सफेद तिलक हो, उसके अगले बायें पैर की घिसी हुई नाल चन्द्रग्रहण के समय अपने हाथ से निकालकर उसकी अंगुठी बनवाकर पहनले तो सभी कामनाएँ पूरी हो जाती है ।"[13] जमुना रामधन का कहना मान जाती है । उसे बेटा हो जाता है । यह बेटा जमुना को न ज्योतिष्य के अनुष्ठान से हुआ है न घोडे के घीसी हुई नाल की अंगुठी पहनने से होता है । उसे यह बेटा रामधन के साथ गुप्त संबध रखने से होता है ।

स्वातंत्र्योत्तर समाज में फैली हुयी अंधश्रध्दा का चित्रण किया है । साथही उपन्यासकारने उससे उत्पन्न परिणाम की ओर संकेत किया है । आज की समाज में अंधश्रध्दा का निर्मुलन करना उचित होना है ।

4:2:9 कर्तव्य के प्रति जागरुक रहना ।

व्यक्ति समाज का घटक है । व्यक्ति को जीवन गुजरते समय अनेक कर्तव्यों की पुर्तता करनी पड़ती है । व्यक्ति कर्तव्य पूर्ति में असमर्थ रहा, तो उसकी अधोगती हो जाती है । व्यक्ति को परिवार, समाज, धर्म, देश आदि संस्थाओं के कर्तव्य के प्रति जागरुक रहना पडता है । डॉ.धर्मवीर भारतीजी के पात्रों में कर्तव्य के प्रति जागरुकता दिखायी देती है ।

गुनाहों का देवता में डॉ.शुक्ला अपने शिष्य चन्दर के उपर अनेक जिम्मेदारीयाँ छोड़ देते है । चन्दर अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक रहता है । वह डॉ.शुक्ला का हर काम, सुधा की शिक्षा, ब्याह के लिए उसको तैयार करना है । एकतरफ वह अपना कर्तव्य निभाता है और दूसरी तरफ स्वयं के साथ सुधा का भी जीवन नष्ट कर देता है ।

सुधा ससुराल जाते ही चन्दर के खाने-पीने की देखभाल बिनती करती है वह अपना कर्तव्य समझकर करती है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" का नायक माणिक अपनी प्रेमिका जमुना से "नमकीन पुए" और "कैथे की चटनी" खाता है । माणिक रोज मिलन के लिए आना-कानी करता है तो जमुना कहती है- "देखो माणिक तुमने नमक खाया है और नमक खाकर जो अदा नहीं करता उस पर बहुत पाप पड़ता है, क्योकि उपर भगवान देखता है और सब बही में दर्ज करता है ।"[14] माणिक को प्रेमिका को मिलने के लिए आना ही पड़ता हे । माणिक अपना कर्तव्य समझकर आता है ।

4:2:9 श्रम का महत्व प्रस्थापित करना ।

व्यक्ति को जीवन में अनेक श्रम करने पड़ते है । हर एक क्षेत्र में श्रम से ही अच्छा फल मिलता है । व्यक्ति को जीवन में प्रगती करने के लिए श्रम करना पड़ता है । धर्मवीर भारतीजी ने अपने उपन्यासों में श्रम का महत्व प्रस्थापित किया है । गुनाहों का देवता के बहुतांश पात्र मेहनत करनेवाले है । नायक चन्दर

मेहनती युवक है । वह अपना अध्ययन करके परीक्षाओंमें सर्व प्रथम आता है । अपना प्रबन्ध जब तक पूरा नही होता तबतक लगातार मेहनत करता है । इस मेहनत का फल उसे मिलता है । अन्य पात्रों में पम्मी दखेने में नाजुक फॅशनेबल युवती लगती है । लेकिन डॉ.शुक्ला के निबन्ध लगातार घन्टे बैठकर टाईप करती है । लेखक शब्दो में– "यह लड़की जो व्यवहार में इतनी सरल और स्पष्ट है, फॅशन में इतनी नाजुक और शौकीन है, काम करने में उतनी ही मेहनती और तेज भी है । उसकी ऊंगुलियाँ मशिन की तरह चल रही थी ।"[15] गौण पात्रों में बिनती मेहनत करनेवाली युवती है । बिनती सुधा के विवाह की तैयारियाँ करती है । वह दिन–रात श्रम करके घर का छोटा–मोटा काम करती है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" में नौकर रामधन श्रम करनेवाला आदमी है । उपन्यासकार किसी भी प्रकार के श्रम को नीची निगाह से देखते नहीं है । रामधन के श्रम सम्बन्धी माणिक कहता है– "दुनिया का कोई भी श्रम बुरा नहीं । किसी भी प्रकार के काम को नीची नीगाह से नही देखना चाहिए वह ताँगा हाँकना ही क्यो न हों ?"[16] उपन्यास में तन्ना परीश्रमी युवक है । तन्ना अपने परिवार का पालन–पोषन करता है । उसका तन परिश्रम से हड्डी का ढांचा बन जाता है । उपन्यास के स्त्री पात्रों में सत्ती मेहनत करनेवाली लड़की है । सत्ती के परिश्रम के बारे में उपन्यासकार लीखते है– "श्रम ने सत्ती के बनत में एक ऐसा गठन, चेहरेपर एक ऐसा तेज, बातो में एक ऐसा अदम्य आत्मविश्वास पैदा कर दिया था कि जब उसे माणिक मुल्ला ने देखा तो उनके मन में लिली का अभाव बहुत हद तक मर गया और सत्ती के व्यक्तित्व से मंत्र मुग्ध हो गये ।"[17] उपन्यासकारने व्यक्ति के जीवन में श्रम का महत्त्व प्रस्तुत किया है ।

4:2:10 **स्वान्त सुखाय –**

ये दो कृतियाँ लिखने के पीछे भारती का उद्देश स्वान्त सुखाय भी है । वे "सुरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास के निवेदन में कहते है– "मै लिख–लिखकर लिखता चल रहा हूँ । जो कुछ लिखता हूँ उसमें सामाजिक उद्देश्य अवश्य है पर वह स्वान्त सुखाय भी है । यह अवश्य है कि मेरे "स्व" में आप सभी सम्मिलित

है, आप सभी सुख-दुख, वेदना-उल्लास मेरा अपना है ।"[17] उपन्यासकार भारती का स्वान्तसुखाय केवल अपनाही नहीं बल्कि समस्त समाज का सुख-दुःख इसमें सम्मिलित है ।

4:2:11 संदेश

मध्यमवर्गीय समाज में निष्फल प्रेम के कारण जीवन में उदासीनता फैल जाती है । अपने उपन्यासोंमें व्यक्ति को उदासीनता से हटकर उत्साह की ओर बढ़ने के लिए शक्ति जगायी है । उन्होने निराशावादी जीवन को ठुकरा दिया है । उन्होंने व्यक्ति को अतीत एवं वर्तमान जीवन को भुलाकर भविष्य के "मंगलमय जीवन" के प्रति आस्था का संदेश दिया है ।

4:3:12 निष्कर्ष

"गुनाहों का देवता" में उपन्यास एक रोमांटिक कलाकार की श्रेष्ठ कथाकृति है । दुसरा उपन्यास "सूरज का सातवाँ घोडा" निम्न–मध्यवर्ग के बदरंग जीवन की रंगीन कहानी है । पहली कृति में अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है, तो दुसरी कृति में यथार्थ प्रेम पर प्रकाश डाला है । अगर पहला उपन्यास स्वच्छन्छतावादी रचना है, तो दुसरा उपन्यास यथार्थवादी फिर भी दोनों उपन्यासों के उद्देश्य पूर्ति के लिए निम्न–मध्यवर्गीय जीवन की प्रेम कहानियों का सहारा लिया है ।

दोनों उपन्यासों का उद्देश्य एक ही है– नर–नारी के नैतिक अनैतिक प्रेम सम्बन्धों को विभिन्न दृष्टिकोणोंसे प्रस्तुत करना । दोनों रचनाओंमें मध्यवर्ग के नामक को आधार बनाकर उसके प्रेम और विकृति को चित्रित किया है । इनमें भावना और वासना, सेक्स और प्रेम, प्रेम और विवाह तथा सेक्स की मानवीय सम्बन्धों में उपयोगिता आदि पहले कृति का मुल कथ्य है । तो "सूरज का सातवाँ घोडा" में निम्न–मध्यवर्गीय समाज की चेतना को सात कहानियों मे प्रस्तुत किया है । इस उपन्यासके पात्रों में एक घोर सामाजिक और आर्थिक विषमता की विकृत रुप है ।

इन प्रेम सम्बन्धों के संघर्ष से उत्पन्न टूटन, बिखराव, आंतरिक पीडा, उदासिनता, असफलता तथा परेशान युक्त कुंठीत मन का चित्रण करना ही उपन्यासकार का लक्ष्य रहा है । पहले उपन्यास में भावना और वासना की आपसी टकराहट का चित्रण करना है तो इसके विपरित भावना से विरक्ति और वासना से अनुरक्ति मिलती है । उस अनुभूतिका यथार्थ चित्रण "सूरज का सातवाँ घोडा" में दिखायी देता है ।

भारतीजी अपने दोनों ही उपन्यास में समाजकी समस्याओं का चित्रण करते है । इन समस्याओं से उत्पन्न दुष्परिणाम की ओर संकेत करते है । साथही इन समस्याओं का निर्मुलन करने का संदेश देते है । समाज व्यवस्था के दोषों में जाती प्रथा, उँच–नीच का भेदभाव, अंधश्रध्दा, रुढी परम्पराएँ आदि पर व्यंग्य करते है ।

स न्द र्भ

1.	धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ.244 ।
2.	डॉ.एन.के जोसफ	हिन्दी उपन्यासो में व्यक्तिवादी चेतना	पृ.131 ।
3.	सम्पा.लक्ष्मण दत्त गौतम	धर्मवीर भारती	पृ. 93 ।
4ट	डॉ.कैलाश जोशी	धर्मवीर भारती : उपन्यास साहित्य	पृ. 41 ।
5.	डॉ.धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 45 ।
6.	वही	वही	पृ. 65 ।
7.	वही	वही	पृ.184–185 ।
8.	वही	वही	पृ. वही ।
9.	वही	वही	पृ. 67 ।
10.	डॉ.धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 24 ।
11.	वही	वही	पृ. 67 ।
12.	डॉ.धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 38 ।
13.	वही	वही	पृ. 38–39 ।
14	वही	वही	पृ. 28 ।
15.	डॉ.धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 20 ।
16.	डॉ.धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 40 ।
17.	वही	वही	पृ. 12–13 ।

अध्याय पाँचवा:-

'धर्मवीर भारती के उपन्यासोमें स्वप्न-मनोविश्लेषण।'

अध्याय पाँचवा – धर्मवीर भारती के उपन्यासो में "स्वप्नमनोविज्ञान"

5:1 स्वप्न का महत्व –

स्वप्न मानव जीवन का घनिष्टत्तम अंग है । सृष्टि का हर एक आदमी स्वप्न देखता रहता है । प्रायः मनुष्य निद्रा में स्वप्न देखता है । इस स्वप्न के निर्माण में भी मनुष्य की सृजनात्मक शक्ति हमेशा कार्य करती है, जो साहित्य की रचना में उपयोगी लगती है । स्वप्न ने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में प्रवेश किया है । साहित्य की विधाओमें से उपन्यास ही एक ऐसी विद्या है जो व्यक्ति का सर्वांग चित्रण करती है । व्यक्ति के आन्तरिक मन का अध्ययन करने में स्वप्नों का महत्व बताते हुऐ डॉ. कैलाश जोशी कहते है कि– "स्वप्न भी व्यक्ति के अचेतन के अध्ययन का माध्यम है । स्वप्न व्यक्ति के मानसिक द्वन्द्व और मानसिक यथार्थ को स्पष्ट करते है ओर कई बार ये पूरे मनोविज्ञान का कार्य कर जाते है ।"[1] स्पष्ट है कि साहित्य में स्वप्नों का महत्व अनिवार्य है ।

प्राचिन काल से आधुनिक काल तक स्वप्नों का महत्व दिखायी देता है । यह महत्व युगानुरुप परिवर्तित होता रहा है । प्राचिन काल में देवताओं के आदेश के रुप में स्वप्नों का महत्व था । अब इसमें परिवर्तन आ गया है । स्वप्नों का महत्व शारीरिक दृष्टि से, भविष्यवाणी के रुप में, भावी घटनाओं की सूचना के रुप में, तो कभी शुभ–अशुभ परिणामों के रुप में स्वीकार है । सर्व प्रथम फ्रायड ने स्वप्न पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार–विनिमय किया है । फ्रायड स्वप्नों का महत्व मनुष्य की आन्तरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए मानता है । स्वप्नों के महत्व के सम्बन्ध में प्लेटो का मत दोहराते हुए डॉ. केलाश जोशी कहते है कि– "बुरे व्यक्ति जीवन में जो बुरे कर्मो करते है, अच्छे व्यक्ति इन कार्यो को स्वप्न में ही करके सन्तोष प्राप्त कर लेते है ।"[2]

इसप्रकार स्वप्नों का महत्व फ्रायड, प्लेटो, एडलर, युंग और हेवलाक एलिस के साथ–साथ भारतीय विद्वानोने भी स्वीकार किया है । इन विद्वानों ने स्वप्न को एक मनोवैज्ञानिक तथ्य के रुप में मान्यता दी है ।

5:2 स्वप्न का स्वरुप –

स्वप्न के स्वरुप में स्वप्न से मिलते–जुलते रुप आते है । इसमें फैन्टसी, निद्राभ्रमण, सम्मोहन तथा दिवा स्वप्न आते है । यह रुप स्वप्न सम्बन्ध में जरुर मिलते–जुलते है । लेकिन स्वप्न और इन रुपो में काफी अन्तर दिखायी देता है ।

5:2:1 फैन्टेसी –

इसमें ज्यादातर कल्पनाएँ रहती है । जयशंकर प्रसाद की "कामायनी" इसका सुन्दर उदाहरण है । इसमें कल्पनाएँ प्रमुख रहने के कारण – इसका पात्र चाँद की शितलता को स्पर्श करने की चेष्टा करता है, स्वर्ग की सुन्दरता को देखने का प्रयत्न करता है । ये सारी कल्पनाएँ है, वास्तव में पात्र ऐसा कर नहीं सकता है । ये कल्पनाएँ मनुष्य, स्वप्न में भी देखता है । फैन्टेसी और स्वप्न में अन्तर है, क्योकि फैन्टेसी में कलाकार का चेतन मन जागृत रहता है । वह किसी वस्तु की तुलना करते समय एक साथ कई उपमाएँ उसके दिमाख में आने पर भी उसका चेतन मन एक को चुनता है । स्वप्न में न उपमाओं की भीड़ रहती है न उसका चेतन मन जागृत रहता है । फैन्टेसी में कलाकार जो चाहें रुप देकर कल्पनापर अपना अधिकार स्थापित करता है । स्वप्न द्रष्टा मनचाहे न रुप दे सकता है, न उसपर अधिकार बनाता है ।

5:2:2 सम्मोहन –

इसमें व्यक्ति के सभी कार्य उसकी इच्छा के परिणाम स्वरुप होते है । व्यक्ति की इच्छा स्फूर्त नहीं होती है । सम्मोहन कर्ता अपने विचारों के माध्यम से उसकी इच्छा स्फूर्त करता है । व्यक्ति अपनी मन की स्थीतियों का स्वयं अध्ययन नहीं करता बल्कि उसे विश्लेषन कर्ता की आवश्यकता रहती है । स्वप्न में अन्य व्यक्ति की आवश्यकता नही रहती है ।

5:2:3 निद्रा–भ्रमण –

इसमें व्यक्ति निद्रा से उठकर अपना अपुर्ण काम पुरा करके फिर सो जाते है । कुछ व्यक्ति निद्रा में उठकर घुम फिर आते है और बाद में सो जाते है ।

...ते है । प्रातःकाल उठते ही उन्हे इस स्थीति का ज्ञान नहीं रहता है । दूसरा व्यक्ति इसके विचित्र प्रसंग अनुभव कर सकता है, लेकिन स्वप्न में ऐसा नहीं होता । निद्रा भ्रमण एक बिमारी है तो स्वप्न बिमारी नहीं है । स्वप्न मानसिक स्वास्थ का लक्षण है ।

5:2:4 दिवा स्वप्न –

इसमें काल्पनिक तत्व होते है । इसमें व्यक्ति अपना काम करते समय खुली हुयी आँख में अपनी इच्छीत वस्तु का प्रतिबिम्ब देख सकता है, इसलिए इसे "दिवा–स्वप्न" कहते है । दिवा–स्वप्न बिना निद्रा देखा जा सकता, अपितु स्वप्न निद्रा में ही देख सकते है ।

5:3 स्वप्न के सम्बन्ध में विद्वानों की दृष्टि –

प्राचिन काल से विचारक स्वप्न के सम्बन्ध में खोज कर रहे है । महाभारत के रचयिता श्री.व्यास ने ब्रहमसूत्र में कहा है, तथा स्वप्नशास्त्र के ज्ञाता कहते है कि, "स्वप्न भविष्य में होनेवाले शुभाशुभ परिणामों के सूचक होते है ।"[3]

स्वप्न का उल्लेख "साहित्य–दर्पण" में भी दिखायी देता है । यहाँ स्वप्न का वर्णन इस के प्रसंग में हुआ है । इसमें स्वप्न की व्याख्या इसप्रकार की है – स्वप्नों निद्रा भपेतस्य विषयानुभवस्तु यः

कोपावेग भयम्लानि सुखदः खादि कारकः ।[4] अर्थात निंद में निमग्न पुरुष के विषयानुभव करने का नाम स्वप्न है । इसमें कोप, आवेग, भय, ग्लानि, सुख, दुःख आदि होते है ।

"श्रीराम आचार्यजीं ने गायत्री महाविज्ञान में स्वप्न दो प्रकार के बताए है, सार्थक स्वप्न और निरर्थक स्वप्न । (हिन्दी उपन्यासों में स्वप्नमनोविज्ञान - डॉ कैलाश जोशी.

ईसाईयों के धर्म ग्रन्थ "बाईबिल" में– "स्वप्न को संदेश वाहक" कहाँ गया है । स्वप्न का सम्बन्ध धर्म से जोड़ दिया है । हिन्दी उपन्यासोंमें मे स्वप्नमनोविज्ञान – डॉ कैलाश जोशी)

आधुनिक विद्वानों में फ्रायड स्वप्न का सम्बन्ध मन से जोडकर अतृप्त यौन इच्छाओं के कारण, स्वप्न दिखायी देते है । दुसरा विद्वाण एडलर ने फ्रायड मत स्वीकार तो किया लेकिन हर स्वप्न के पीछे अतृप्त यौण इच्छाओं को अस्वीकार किया है । वह बताता है कि– स्वप्न में व्यक्ति अपनी समस्याओं को सरल हल ढूंढने की चेष्टा करता है और स्वप्न व्यक्ति की जीवन प्रणाली से जुडे होते है । जुँग ने फ्रायड और एडलर को एक अंग तक स्वीकार किया है । जुँग के अनुसार– "स्वप्न में हमारी विचारधारा का विरोध पक्ष अभिव्यक्ति पाता है । उसने वैयक्तिक अवचेतन से जोड़ने की चेष्टा की है और माना है कि सामूहिक अवचेतन व्यक्ति के अवचेतन का मार्ग–दर्शन करता है ।"[5]

एलिस अपनी मान्यताओ में फ्रायड–एडलर, युंग की मान्यताओं का समन्वय है । तो भारतीय विद्वाण अरविन्द स्वप्न को मानव जीवन से जोड़कर उसे सार्थक मानते है । इस प्रकार स्वप्न की मान्यताओं में परिवर्तन स्थूल से सुक्ष्म की ओर हो रहा है ।

5:4 आधुनिक हिन्दी उपन्यासो में स्वप्न मनोविज्ञान –

उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद एक सामाजिक उपन्यासकार है । उन्होने बहुचर्चित उपन्यास हिन्दी साहित्यमें लिखे है । उनके बहुतांश उपन्यास में पात्रों का बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है । उनके उपन्यास "प्रेमाश्रय", "कायाकल्प", "निर्मला", तथा "गबन" इन उपन्यासमें ही स्वप्न मनोविज्ञान है । "प्रेमाश्रय" के स्वप्न सिर्फ स्वप्न के लिए आए है । "गबन" के स्वप्न में भावी घटना का अभास है । "रंगभूमि" में 'सोफिया' के मन का अन्तर्द्वद्व याने उसकी मनोदशा का वर्णन स्वप्न में दिखायी देता है । वास्तव में इस उपन्यास के स्वप्न ही मनोविज्ञान रुप दिखाते है । "निर्मला" में निर्मला का पूरा जीवन स्वप्नों के प्रतिकोंके रुप में दर्शाया है । प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य मनोविज्ञान कम दिखायी देता है ।

"अज्ञेय" के तीन उपन्यास है – शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप और अपने–अपने अजनबी । इन उपन्यासो में स्वप्न आन्तरिक जीवन को खोलते है । ये स्वप्न पात्रों के जीवन का प्रतिबिम्ब है । इन स्वप्नों के द्वारा पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर सकते है ।

जैनेंद्र मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रुप में बहुचर्चित है । इनके उपन्यास "परख", सुनिता, त्यागपत्र, कल्याणी, आदि में मनोवैज्ञानिकता है । इनके उपन्यासमें स्वप्न नहीं है, एकही उपन्यास में स्वप्न आया है । परख नायिका एक विधवा स्त्री "कट्टो" है स्वप्नों में कट्टो के मन की दमित इच्छाएँ प्रकट होती है साथ ही कट्टो के – चेतन मन की इच्छाएँ भी प्रकट हुई है । इसमें एकही स्वप्न की दो विचारधाराएँ है।

इलाचंद्र जोशी – "संन्यासी", पर्दे की रानी, "जहाज का पंछी", ऋतुचक्र" इन उपन्यासों में स्वप्न का परिवेश सुन्दर है और यह स्वप्न मनोविज्ञान की दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं ।

उपेन्द्रनाथ अश्क के– "सितारें के खेल", "गिरती दिवारे", गर्म–राख" आदि उपन्यास है । इनमें जो स्वप्न दिखाये है,वे अपना मनावैज्ञानिक दृष्टि से महत्व रखते है । इन उपन्यास के स्वप्नों में पात्रों के चेतन मन का द्वन्द्व, मानसिक स्थितियों का पता, अवचेतन मन में दबी ईच्छाएँ प्रकट हुई है ।

भगवती चरण वर्मा के – "चित्रलेखा", "वह फिर नही आई" उपन्यास मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखते है । उपन्यास के स्वप्नों में प्रतिकों का समन्वय है, पात्रों की अतृप्त इच्छाएँ, साथ ही पात्र के मन का संशय स्पष्ट हुआ है ।

5:5 उपन्यास साहित्य को स्वप्नों की देन –

उपन्यास में स्वप्नों का होना नितान्त आवश्यक है । उपन्यास में स्वप्न के कारण कथ्य और शिल्प में ही परिवर्तन दिखायी देता है । स्वप्न के द्वाराही उपन्यास के पात्रों के मानसिक द्वन्द्व, मन में छीपी अतृप्त ईच्छाएँ, मानसिक यथार्थ स्पष्ट होता है ।

स्वप्न ने उपन्यास के कथ्य को अधिक सूक्ष्म एवं गहरा बनाया है । उपन्यास के पात्र अपने मन की बात स्पष्ट करने में हिचकता है, स्वप्न में यह बात हमें अनायास मालुम होती है । "अज्ञेय" के "शेखर एक जीवनी" में नायक शेखर के स्वप्न में अपनी बहन सरस्वती के प्रति भावना प्रकट हो गयी है ।

स्वप्न कथ्य के द्वन्द्व को सजीव बना देता है । पात्रों के मानसिक द्वन्द्व को स्वप्न प्रकट करता है । डॉ.धर्मवीर भारती का "गुनाहों का देवता" में नायक चन्दर के स्वप्न द्वारा भावना और वासना का द्वन्द्व दिखाया गया है ।

स्वप्न कथ्य को अनावश्यक विस्तार से उपन्यास को बचाता है । स्वप्न से पात्रों के मन का भय, मन की व्यथा का चित्रण थोड़ी ही पक्तियों में व्यक्त होता है । इससे कथ्य का अधिकत्तम विस्तार नहीं होता है ।

स्वप्न पात्रों के आन्तरिक दर्शन का सुन्दर माध्यम है । पात्रों के चरित्रों की बाहय स्थीति अनायास दिखायी देती है । चरित्रों कि आन्तरिक स्थीति जानने के लिए स्वप्न ही माध्यम योग्य है ।

स्वप्न ने उपन्यास के शिल्प को विशिष्ठ गति दी है । उपन्यास में स्वप्नद्वारा अतीत की घटनाओं का सम्बन्ध वर्तमान से जोड़ दिया है । जिससे उपन्यास रोचक, मोहक बन गए है ।

स्वप्न से उपन्यास के शिल्प पर काफी अन्तर आता है । उपन्यासकार अपनी उपन्यास की कथा स्वप्न के माध्यम से प्रतिकांके रुप में प्रकट कर देता है । प्रेमचंद का 'निर्मला' इसका श्रेष्ठत्तम उदाहरण है । इसप्रकार स्वप्न में उपन्यास साहित्य को मनमोहक, रोचक, सुन्दर बनाया है ।

5:6 "धर्मवीर भारती" के उपन्यासों में स्वप्न मनोविज्ञान ।

"भारती के दोनोंही उपन्यास अपने प्रयोग की दृष्टि से परिपूर्ण है । समकालीन उपन्यासकारों में भी भारती अपनी कलात्मकता के कारण एक अनोखा स्थान रखते है । इनके दोनों ही उपन्यास स्वप्न–मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपुर्ण माने जा सकते है । भारतीजी ने इन स्वप्नों के द्वारा फ्रायड, एडलर के स्वप्न–मनोवैज्ञानिक सिध्दातों का अनुकरण किया है । भारतीने इन दोनो ही उपन्यासों में इन स्वप्नों को प्रतिपादन करने के लिए निम्न–मध्यवर्गीय समाज की प्रेम कहानियों का सहारा लिया है ।

"गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" इन दो उपन्यासों में जो स्वप्न है , वे केवल स्वप्न नहीं है । इन स्वप्नों में गहरा मनोविज्ञान छीपा हुआ है । इसमें स्वप्न और मनोविज्ञान का सम्बन्ध अटूट लगता है । भारतीजी ने स्वप्न-मनोविज्ञान में एकसुत्रता लाने का सुन्दर प्रयास किया है । इनके स्वप्न पात्र की अतृप्त ईच्छाएँ, मन का द्वन्द्व प्रेम ओर काम का संघर्ष प्रकट करते है ।

5:6:1 "गुनाहों का देवता –

इस उपन्यास में कुल-मिलाकर तीन स्वप्न आये है । ये तीनों स्वप्न नायक चन्दर ही देखता है । यह स्वप्न जिस रात या समय पर पड़ते है । इस स्वप्न के पूर्व स्वप्न दृष्टा ने समय कैसा और किस के साथ बिताया । इसका प्रभाव स्वप्न में दिखायी देता है ।

चन्दर का एकांतिक प्रेम सुधा के साथ है । वह इस प्रेम को हर हाल में आदर्श बनाए रखने की कोशिश करता है । दूसरी सहेली पम्मी उसके साथ झुठा अध्यात्मिक प्रेम करती है । इस प्रेम के अन्दर वासना की भूख छीपी हुई है । इस वासना में वह चन्दर को जकड़ लेना चाहती है । चन्दर एक श्याम के प्रहर में पम्मी के घर पहुँचता है । दोनों ही आपसी बातचीत से एक दुसरे के प्रति आकृष्ट होते है । तत्पश्यात उनका फिल्म देखने का इरादा होता है । दोनों ही फिल्म से उब जाने से, उसे अधुरी छोडकर बाहर आते है । दोंनो अपनी कार से शहर के बाहर आते है । वे मॅकफर्सन झील पर पहुँच जाते है । यहाँ रात के समय सृष्टि का सौन्दर्य देखते है । पम्मी चन्दर के साथ सेक्स की बात करती है । जैसे पम्मी चन्दर का कन्धा पकड़कर कहती है– "कितना अच्छा हो अगर आदमी हमेशा सम्बन्धों में दूरी रखे । सेक्स न आने दे । ये सितारें है, देखो कितने नजदिक है । करोडों बरस से साथ है, लेकिन कभी-भी एक-दुसरे को छुते तक नही, तभी तो संग निभ जाता है ।"[6] इस के-पश्चात पम्मी चन्दर का माथा अपने होठों तक लाकर छोड़ देती है । फिर पम्मी चन्दर को अपनी बाहों में घेरकर अपने वक्षतक खिंचकर छोड़ देती है । इस से चन्दर का रोम-रोम पूलकीत होता है । थोड़ी ही देर में दोनों ही झील से घर आते है ।

पम्मी के बर्ताव से चन्दर का मन बेचैन हो जाता है । उसे रात को बहुत देर तक निंद नही आती है । धीरे-धीरे जब निंद लगती है, तो उसे एक स्वप्न दिखायी देता है ।

"बार-बार झपकी आयी और लगा कि खिडकी के बाहर सुनसान अंधेरे में से अजब-सी आवाजें आती हैं और नागिन बनकर उसकी साँसो में लिपट जाती है । वह परेशान हो उठता है, इतने में फिर कहीं से कोई मीठी सतरंगी संगीत की लहर आती है और सचेत ओर सजग कर जाती है । एक बार उसने देखा कि सुधा ओर गेसू कहीं चली जा रही है । उसने गेसू को कभी नही देखा था लेकिन उसने सपने में गेसू को पहचान लिया । लेकिन गेसू तो पम्मी की तरह गाऊन पहने हुए थी । फिर देखा बिनती रो रही है और इतना बिलख-बिलखकर रो रही है कि तबीयत घबरा जाये । घर में कोई नहीं है । चन्दर समझ नहीं पाता कि वह क्या करे । अकेले घर में एक अपरिचित लडकी से बोलने का साहस भी नही होता उसका । किसी तरह हिम्मत करके वह समीप पहुँचा तो देखा अरे यह तो सुधा है । सुधा लूटी हुई-सी मालूम पडती है । वह हिम्मत करके सुधा के पास बैठ गया । उसने सोचा, सूधा को आश्वासन दे लेकिन उसके हाथों पर जाने कैसी सुकुमार जंजीरे कसी हुई है । उसके मुँह पर किसी की साँसो का भार है । वह निश्चेष्ट है । उसका मन अकुला उठा । वह चौंकरकर जाग गया तो देखा वह पसीने से तर है ।"[7]

इस स्वप्न में चन्दर के मन की द्वन्द्वात्मक स्थितियों का दर्शन दिखायी देता है । साथ ही स्वप्न उसके मन में छिपि दमित ईच्छाओं को व्यक्त है । फ्रायड के मत की पुष्टी इस स्वप्न में प्रकट होती है । फ्रायड हर एक स्वप्न के मूल में अतृप्त लैंगीक ईच्छाओं को प्रमुखता देता है ।

इस स्वप्न का विश्लेषण करे तो इसका पता चलता है ।

1.	सुनसान अंधेरे में अजब–सी आवाजे आना	– चन्दर की द्वन्द्वात्मक स्थिति
2.	आवाजों का नागिन बनकर उसकी साँसो से लिपट जाना	– नागिन पम्मी अपने वासना के जहर से चन्दर को जकडना चाहती है । इसका भय चन्दर के मन में जागृत होता है ।
3.	मीठी सतरंगी की लहर आना	– सुधाके भावात्मक प्रेम का प्रतिक ।
4.	उसके द्वारा स्वप्न में गेसू को पहचानना और उसे गाऊन पहने देखना	– सुधा की गेसू सम्बन्धी बातचीत से अनुमान करता है यह गेसू है । पम्मी की तरह गाऊन पहन कर देखतेही उसे डर लगता है कि– पम्मी की तरह वह भी वासनायुक्त है ।
5.	सुकूमार जंजीरें	– चन्दर की अतृप्त ईच्छाएँ पुरी नही होती है ।
6.	सुधा का बिलख–बिलखकर रोना	– चन्दर का भय प्रकट होता है कि सुधा का उसके प्रति भरोसा टूट जायेगा ।
7.	उसके मुँहपर किसी की सॉसों का भार है	– चन्दर पम्मी की वासना मे जकड़ा हुआ है ।
8.	उसका मन का अकूला होना	– वह सुधा के आदर्श प्रेम को छोडकर पम्मी के शारीरिक प्रेम को अपनाता नहीं है ।

इसप्रकार स्वप्न में सुन्दर, मनमोहक प्रतीकों का इस्तमाल करके उसे सजाया है । इस स्वप्न से चन्दर का वर्तमान द्वन्द्व प्रकट हुआ है । उसके मन में भावना और वासना का द्वन्द्व है । उसका मन वासना के प्रति डरता है । यह उसका भय पम्मी के कारण होता है । जो मैकफर्सन झील में पम्मी के वासना का रुप का दर्शन दिखायी देता है । उसका प्रतिबिम्ब स्वप्न में दिखायी देता है । चन्दर पम्मी की वासना से छुटकारा पाना चाहता है ।

उसे सुधा का भावनात्मक प्रेम प्रभावित करता है । इस प्रेम को वह खोना नहीं चाहता है । उसके मन में डर है कि अगर पम्मी वाली घटनाएँ सुधा को मालूम हो जायेगी तो उसका –हदय पिघल जायेगा । इसलिए वह सुधा के प्रयय में डूबा रहना चाहता है । चन्दर पम्मी को चाहता है लेकिन उसका आन्तरीक मन गलत कदम उठाने में तैयार नहीं है । इसप्रकार स्वप्नद्वारा चन्दर के मन में छीपी भावनाएँ व्यक्त हुयी है ।

अब "गुनाहों का देवता" आये हुए दुसरे स्वप्न का अध्ययन करना ठिक है यह स्वप्न भी चन्दर ही देखता है । चन्दर को पम्मी का मसुरी से खत आता है। इसमें वह चन्दर को अपने भाई बर्टी से मिलने का आग्रह करती है । सुधा का ससुराल से बहुत दिन खत न आने से चन्दर का मन बेचैन होता है । चन्दर बर्टी के आने की खबर मिलते ही वह कार लेकर उसके पास पहुँचता है । चन्दर बर्टी को तन्दुरुस्त देखकर आश्चर्य चकित होता है । बर्टी के मन का परीवर्तीत रुप भी देखता है । बर्टी को प्रेम की ठोकरोने बहुत कुछ सिखाया है । दोनों की बातचित शुरु होती है । बर्टी अपने भावी पत्नी के सालगीरह उपहार के रुप में प्रेमी देने की बात करता है । इसपर चन्दर हँसता है, तो बर्टी उसे कहता है । जैसे– "मै इतनी सलाह तुम्हे दे रहा हूँ, कि अगर तुम किसी लडकी से प्यार करते हो ती ईश्वर के वास्ते उससे शादी मत करना– तुम मेरा किस्सा सुन चुके हो । अगर दिलसे प्यार करना चाहते हो और चाहते हो कि वह लडकी जीवन भर तुम्हारी कृतज्ञ रहे तो तुम उस की शादी मत करा देना.... यह लडकियों के सेक्स जीवन का अन्तिम सत्य है....।"[8]

बर्टी की इन विकृत बातों ने चन्दर के मनपर गहरा असर किया है । चन्दर घर आने पर उसे निंद न आती है । उसका मन बेचैन होता है । रात को सोते समय निंद से बार–बार चौंककर उठता है । वह एक सपना देखता है– "एक बहुत बडा कपूर का पहाड है । बहुत बडा । मुलायम कपूर की

बडी–बडी चट्टानें और इतनी पवित्र खुशबू कि आदमी की आत्मा बेले का फूल बन जाये । वह और सुधा उन सौरभ की चट्टानों के बीच चढ़ रहे है । केवल वह है और सुधा.... सुधा सफेद बादलों की साड़ी पहने है और चन्दर किरनों की चादर लपेटे है । जहाँ–जहाँ चन्दर जाता है , कपूर की चट्टानों पर इन्द्रधुनुष खिल जाते है और सुधा अपने बादलों के आँचल में इन्द्रधुनष के फुल बटोरती चलती है ।

सहसा एक चट्टान हिली और उसमें से एक भयंकर प्रेत निकला । एक सफेद कंकाल– जिसके हाथ में अपनी खोपडी ओर एक हाथ में जलती मशाल ओर उस मुण्डहीन कंकाल ने खोपड़ी हाथ में लेकर चन्दर को दिखायी । खोपड़ी हँसी ओर बोली– "देखो, जिन्दगी का अन्तिम सत्य यह है । यह ! " और उसने अपने हाथ की मशाल उँची कर दी ।" यह कपूर का पहाड़, यह बादलों की साडी, यह किरनों का परिधान, यह इन्द्रधनुष के फुल, यह सब झुठे है । और यह मशाल, जो अपने एक स्पर्श में इस सब को पिघला देगी ।" ओर उसने अपनी मशाल एक उँचे शिखर से छुआ दी । वह शिखर धधक उठा । पिघलती हुई आग की एक धार बरसाती नदी की तरह उमड़कर बहने लगी ।

"भागो, सुधा ! चन्दर ने चीखकर कहा– "भागो !" सुधा भागी, चन्दर भागा ओर वह पिघली हुई आग की महानदी लहराते हुए अजगर की तरह उन्हे अपनी गुंजलिका में लपेटने के लिए चल पड़ी, शैतान हँस पडा– "हा ! हा ! हा !" चन्दर ने देखा, सुधा शैतान की गोद में थी ।"[9]

इससे स्पष्ट होता है कि – बर्टी की बातों ने चन्दर के मन को परीवर्तीत किया है । चन्दर का जो आदर्श प्रेम पर भरोसा है, वह हटने लगा है । अब इस प्रेम से नफरत करने लगा है । यही बात प्रतीकों के रुप में प्रकट हुयी है । एक वस्तु कई वस्तुओं के प्रतीक भी हो सकती है ।

1.	सौरभ, पवित्र खुशब और इन्द्रधनुष के फुल	– सूधा के कोमल प्रेम का प्रतीक बन कर आते है ।
2.	बडी बडी चट्टाने, जलती मशाल ओर कपूर का पहाड	– चन्दर का प्रेम–जीवन कठिनाईयोंसे भरा हुआ है ।
3.	भयंकर प्रेत, भागना, सफेद कंकाल ओर मुन्डहिन कंकाल अपनी खोपडी अपने हाथ में लेना	– सुधा की मृत्यु नजदीक देखकर चन्दर का भय प्रकट हुआ है ।
4.	सुधा शैतान की गोद में होना	– सुधा की मृत्यु को चन्दर का प्रेम बचानें में असमर्थ होता है ।

चन्दर की आस्था आदर्श प्रेम से हटनें लगी है । यह प्रेम जीवन की कठिनाईयों का मुकाबला करने में असमर्थ होता है । अतः स्पष्ट है कि – मनुष्य के जीवन का अंतिम सत्य–प्रेम नहीं, सिर्फ मृत्यु है ।

उपन्यासकारने चन्दर के मन की स्थितियाँ स्वप्न के प्रतिकों से सँजायी है । इस स्वप्न में मनोविज्ञान छीपा हुआ है । जीवन की सही व्याख्या करने में उपन्यासकार सफल हुऐ है । इस स्वप्न का विश्लेषण करते हुए कैलाश जोशी कहते है– "चन्दर की आस्था धीरे–धीरे प्रेम के आदर्श से हटने लगी है । अब वह भावुक नहीं रह गया है, घोर बौध्दिक और जीवन का कठोर विश्लेषणकर्ता बन गया है । इसलिए चन्दर आगे चलकर साफ कहता है कि, सुधा भी अन्त–तो–गत्वा वही साधारण लड़की है, जो कुँवारे जीवन में पति और विवाहित जीवनमें प्रेमी की भूखी होती है ।[10]

इसप्रकार चन्दर जीवन की वास्तविक पहचान करने लगा है । चन्दर का मन प्रेम के इन्द्रधनुष जेसे रंगो से ऊबने लगता है । वह जीवन के अंतिम सत्य मृत्यु को ही उचित समझता है ।

गुनाहों का देवता" का तिसरा ओर अंतीम स्वप्न पर दृष्टि डालनी है । इस स्वप्न के पहले चन्दर के मन की आन्तरिक आवस्था देखनी पडती है । गेसू एक दिन चन्दर के यहाँ आती है । वह चन्दर को सुधा के प्रेम की याद दिलाकर चली जाती है । इसके बाद पम्मी आकर उसे लिफाफा देती है और वह मसुरी अपने पति के पास चली जाती है । चन्दर ने पम्मी को रोकने की कोशीश की लेकिन उसका कोई प्रभाव उसपर पड़ता नही है । अब चन्दर के मन में एक तरफ सुधा के प्यार की कमीयाँ और दुसरी तरफ पम्मी का वासनात्मक प्रेम, जागृत होता हे । इन द्वन्द्वात्मक स्थिति से उसका मन वासना से पागल होता है । इसका सही रुप स्वप्न में दिखायी देता है ।

"आज मै विश्वास करता हूँ कि प्यार के माने सिर्फ एक है, शरीर का सम्बन्ध । कम से कम औरत के लिए । औरत बड़ी बातें करेगी, आत्मा, पुनर्जन्म परलोक का मिलन, लेकिन उसकी सिध्दि सिर्फ शरीर में है और वह अपने प्यार की मंजीलें पार कर पुरुष को अन्त में एक ही चीज देती है – अपना शरीर । मै तो अब यह विश्वास करता हूँ सुधा की वही औरत मुझे प्यार करती है, जो मुझे शरीर दे सकती है । बस, इसके अलावा प्यार का कोई रुप अब मेरे भाग्य में नही ।" चन्दर की आँख में कुछ धधक रहा था... सुधा उठी और चन्दर के पास खडी हो गयी– "चन्दर तुम भी एक दिन ऐसे हो जाओगे, इसकी मुझे उम्मीद नही थी । काश कि तुम समझ पाते कि..." सुधा ने बहुत दर्द भरे स्वर में कहा ।

"स्नेह है ।" चन्दर उठाकर हँस पडा– और उसने सुधा की ओर मुडकर कहा– "और अगर मै उस स्नेह का प्रमाण माँगू तो ? सुधा । दाँत पीसकर चन्दर बोला– " अगर तुमसे तुम्हारा शरीर माँगू तो ?

"चन्दर ।" सुधा चीखकर पीछे हट गयी । चन्दर उठा और पागलों की तरह उसने सुधा को पकड लिया– "यहाँ कोई नही है– "सिवा इस कब्र के । तुम क्या कर सकती हो ? बहुत दिन से मन में एक आग सुलग रही है । आज तुम्हें बरबाद कर दूँ तो मन की नारकीय वेदना बुझ जाये... बोला । उसने अपनी आँख की पिघली हुई आग सुधा की आँखों में भरकर कहाँ ।

"सुधा क्षणभर सहमी-पथरायी दृष्टि सें चन्दर की ओर देखती रही फिर सहसा शिथिल पड गयी और बोली- "चन्दर, मै किसी की पत्नी हूँ । यह जन्म उनका है । यह माँग का सिन्दूर उनका है । इस शरीर का श्रृंगार उनका है । मुझे गला घोंटकर मार डालों । मैने तुम्हे तकली दी है । लेकिन....."

"लेकिन....." चन्दर हँसा और सुधा को छोड दिया - "मै तुम्हें स्नेह करती हूँ, लेकिन यह जन्म उनका है । यह शरीर उनका है.... हः। हः। क्या अन्दाज है प्रवंचना के । जाओ सुध..... मै तुमसे मजाक कर रहा था । तुम्हारे इस जूठे तन में रखा क्या है ?

सुधा अलग हटकर खडी हो गयी । उसकी आँखो से चिनगारियाँ झरने लगी, "चन्दर तुम जानवर हो गये, मै आज कितीन शरमिन्दा हूँ । इसमें मेरा कसूर है, चन्दर । मै अपने को दण्ड दूँगी, चन्दर ? मै मर जाऊँगी । लेकिन तुम्हे इनसान बनना पडेगा, चन्दर । और सुधा ने अपना सिर एक टूटे हूऐ खम्भे पर पटक दिया । चन्दर की आँख खुल गयी, वह थोडी देर तक सपने पर सोचता रहा ।"[11]

इस स्वप्न के द्वारा चन्दर का चरित्र उँचाई से गीरता हुआ दिखायी देता है अपनी माशुका सुधा के प्रति उसका आदर्श प्रेम टुटा हुआ लगता है । पम्मी के सम्पर्क से उसके बर्ताव में परिवर्तन आता है । उसका विश्वास आदर्श प्रेम से हटकर शरीर के सम्बन्ध को ही महत्वपूर्ण लगता है । चन्दर का इस स्वप्न में प्रेम के प्रति देखने का दृष्टीकोन ही बदल जाता है । जो चन्दर सुधा के प्रेम पर गर्व करता है, वही स्वप्नमें उसका शरीर माँगने में हिचकीचाता नहीं है ।

दुसरी और सुधा की शादी होने से उससे ही वह असफल रह जाता है । चन्दर स्वप्न में सुधा के प्रेम की प्रतिहिंसा लेना चाहता है । चन्दर इस स्वप्न में इन्सान से जानवर बन जाता है । अपनी वासना भरी निगाहों से सुधा को पकडकर बरबाद करना पसन्द करता है । यह स्पष्ट होता है कि- उपन्यास के नायक चन्दर के मन में छीपी अतृप्त लैंगिक ईच्छाएँ स्वप्न के मूल में दिखायी देती है ।

यहाँ फ्रायड के स्वप्न सिध्दान्त का अनुकरण हुआ है । जागरूकता में उपन्यास का पात्र अपने मन की बात स्पष्ट करने में डरता है, वही चन्दर की बात स्वप्न में अनायास हमें मालुम होती है । जो चन्दर वासना की निन्दा करता है, वही व्यक्ति स्वप्न में वासना का गौरव करना पसन्द करता है । चन्दर की आँख में वासना की आग बुझाने की उत्कट भावना स्वप्न में प्रतित होती है । चन्दर स्वप्न में सुधा के झुठे सौन्दर्य, तन की निन्दा करता है ।

स्वप्न में दुसरी ओर सुधा का रुप और उसकी प्रेम की आदर्शवादीता दिखायी है । जब चन्दर सुधा को उसका शरीर माँगता हे, तो वह स्पष्ट रुपसे इन्कार कर देती है । यह उपन्यास अपनी आदर्शवादीता होने के कारण यह नायीका सुधा का रुप इसप्रकार का दिखाया गया है । सुधा अपना तन पति को देना चाहती है और व अपना मन अपने प्रेमी चन्दर की तरफ झुका देती है । अपने प्रेमी चन्दर का जानवर रुप देखकर वह दु:खी होती है । उसे सत्पथपर लाने के लिए स्वयं ही प्रायश्चित करना पसन्द करती है ।

इस स्वप्न में चन्दर के मन की व्यथा, वासना की आग प्रकट होती है ।

5:6:2 "सूरज का सातवाँ घोडा"

इस उपन्यास में प्रेम कहानीयों के द्वारा निम्न मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ रुप दिखलाया है । इसमें स्वप्न यथार्थ को तिखा बनाने के लिए आए है । इस उपन्यास में दो स्वप्न अंकीत है । इन स्वप्नों में निमन-मध्यवर्ग के कटू समस्याओं का बोध होता है । साथ ही ये स्वप्न पात्रों के अवचेतन मन की गहराईयो में डूबे लगते है । इस उपन्यास के स्वप्न जीवनके सत्य से परिचित लगते है । यह स्वप्न हमें भुत, भविष्य एवं वर्तमान की सूचना देते है । इन स्वप्नों का मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे बड़ा महत्व है ।

उपन्यास का पहला स्वप्न तीसरी कहानी के अनाध्याय में आता है । यह

स्वप्न कहानी श्रोताओं में से लेखक देखता है । माणिक भुल्ला तन्ना की करुण व्यथा व्यक्त करते है । तन्ना को अपने सौतेली माँ की गालियाँ, पिता की मार सहन करनी पडती है । उसे परिवार का खर्चा चलाना पडता है । साथ ही वह जमुना के प्रेम में असफल होता है । इन तमाम परिस्थितियों से तन्ना का शरीर हड्डी का ढाँचा बन जाता है । तन्ना बिमार पड़ जाते है । इसी हाल में आर.एम.एस. की नौकरी पर जाना पडता है । एक दिन ड्युटी करते वक्त उन्हे एन्जिन की पानी बाल्टी टकराने से दोनों टाँगे टूट जाती है । इसप्रकार तन्ना की दयनीय स्थिती सुनकर श्रोतावर्ग निराश, दु:खी हो जाते है । कहानी का निष्कर्ष सुनने के लिए श्रोतांगण तैयार नही है । श्रोतावर्ग में से एक लेखक का मन बेचैन होता है । उसे रात के समय निंद नही आती है । उसके अर्धसुप्त मन में स्वप्न विचारों का सिलसिला चलता है ।

"स्वर्ग का फाटक । रुप, रेखा, रंग, आकार कुछ नहीं जैसा अनुमान कर लें । अति यथार्थवादी कविताएँ जिनका अर्थ कुछ नहीं जैसा अनुमान कर लें । फाटक पर रामधन बाहर बैठा है । अन्दर जमुना श्वेतवसना, शान्त गम्भीर । उसकी विश्रृंखल वासना, उसका वैधव्य, पुरइन के पत्तों पर पडी ओस की तरह बिखर चुका है, वह वैसी ही है जैसी तन्ना को प्रथम बार मिली थी ।

फाटकर पर घोड़े की नालें जड़ी है । एक, दो असंख्य ! दूर धुँधले क्षितिज से एक पतला धुएँ की रेखा–सा रास्ता चला आ रहा है । उस पर कोई दो चीज़ें रेंग रही है । रास्ता रहरह कर काँप उठता है, जैसे तार का पुल ।

बादलों में एक टार्च जल उठती है । राहपर तन्ना चले आ रहे है । आगे–आगे तन्ना, कटे पाँवो से घिसलते हुए, पीछे–पीछे उनकी दो कटी टाँगे लड़खडाती चली आ रही है । टाँगोपर आर.एम.एस के रजिस्टर लदे है ।

फाटकर पर पाँव रुक जाता है । फाटक खुल जाते है । तन्ना

फाइल उठकार अन्दर चले जाते है । दोनों पाँव बाहर छूट जाते हैं । बिस्तुइया की कटी हुई पुँछ की तरह छटपटाते है ।

कोई बच्चा रो रहा है । वह तन्ना का बच्चा है । दबे हुए स्वर यूनियन, एस.एम.आर., एम.आर.एस., आर., एम.एस. युनियन । दोनों कटे पाँव वापस चल पड़ते है, धुएँ का रास्ता तार के फूल की तरह काँपता है । दूर किसी स्टेशन से कोई डाक गाडी छूटती है ।.....[12]

उपर्युक्त स्वप्न में तन्ना की दयनीय स्थीति का यथार्थ नग्न रुप प्रकट हुआ है । स्वप्न का विश्लेषण करे तो इसका पत्ता चलता है ।

स्वर्ग की सुन्दरता ईमानदार तन्ना के लिए एक उपहास है । तन्ना के लिए स्वर्ग की कल्पना ही काफी है वह उसे छू नही सकता है । रामधन जैसे लोगों के लिए "स्वर्ग के फाटक पर जगह है । जमुना विधवा होनेपर संतृष्ठ, प्रसन्न है । जमुना के पूर्ववर्ति जीवन और वर्तमान जीवन में कोई अन्तर नहीं है । जमुना के शान्त, गम्भीर स्वभाग के पीछे वासना छीपी हुई है । जमुना स्वर्ग के फाटक के अन्दर बैठी हुई है । वह अपने प्रेमी तन्ना को प्रथम बार मिलने जा रही है । ऐसा लगता है ।

दुसरी ओर तन्ना अपने जीवन में असंतुष्ट दिखायी देते है । अपने माता-पिता, प्रेमिका, पत्नि, नौकरी में अप्रसन्न है । तन्ना परिश्रम के पुजारी हैं, अपना परिवार चलाने की छटपटाहट उनमें है । रेल्वे दुर्घटनामें उनकी टाँगे टूट जाती है । उनकी आर.एम.एस. की युनियन साथ है । अंत में तन्ना अपने प्राण छोड जाते है ।

इस स्वप्न में प्रतिकों की अभिव्यंजना की है ।

1.	स्वर्ग का फाटक	तन्ना का उपहास युक्त अनुमान
2.	पूर इन के पत्तों पर पडी है	जमुना का वैधव्य में श्रृंगार पुर्ण रुप पड़ी है
3.	बादलों में टार्च जल उठती है	रेल्वे अपघात का प्रतिक
4.	बिस्तुइया की कटी हुई पूँछ	कटी हुयी टाँगो के छटपटाहट के प्रतिक
5.	पाँव	परिश्रम के प्रतिक
6.	डाक गाडी	प्राणों के प्रतिक

इसप्रकार स्वप्न हमें तन्ना के भुत, वर्तमान स्थिति की पहचान करता है । तन्ना की दयनीय मृत्यु देखकर उसका बच्चा रोता है । उसका संगोपन करने के लिए कोई नहीं है । इससे स्वप्न में भविष्य की चिंता दिखायी देती है । साथही जमुना की अतृप्त कामवासना स्वप्न में व्यक्त हुयी है । स्वप्न मनोविज्ञान के निकटतम लगता है । इस स्वप्न में मध्यवर्गीय समाज का वर्तमान जीवन का यथार्थ रुप सामने आता है ।

उपन्यास का दूसरा स्वप्न छठी कहानी के अनाध्याय में आया है । स्वप्न कहानी श्रोतावर्ग में से लेखक देखता है । इस स्वप्न का विश्लेषण करने से पहले पृष्ठभुमी का परिचय कर लेना आवश्यक है । पाँचवी कहानी ओर छठी कहानी का शीर्षक एक ही है– "काले बेंट का चाकू ।" इस कहानी का प्रमुख स्त्री पात्र है – सत्ती । यह निम्न मध्यवर्ग में पली है । वह माणिक से प्रेम करती है, लेकिन महेसर जैसे निकृष्ट लोगों की वासनाभरी दृष्टि सत्ती पर पडती है । माणिक अपने भाई–भाभी और समाजके डरसे सत्ती को अपनाता नही है । चमन ठाकूर माणिक के घर में आते ही सत्ती → को → → मार पीट करता है, जिससे सत्ती बेहोश होती है । अतः उसे गाडी में डालकर दूर कहीं ले जाते है । सत्ती के मृत्यु की अफवाह फैलती है, जिसे सुनकर माणिक बेचैन होता है । उसका मन पढाई में नही लगता है । माणिक निश्चय करता है कि– उसने सत्ती का जीवन नष्ट कर दिया है । उसी प्रकार उसनाही जीवन नष्ट करना चाहते है । उसका मन आत्मघातकी बन जाता है । एक दिन सत्ती और चमन ठाकूर अपने बच्चे साथ भिखारी के रुप में दिखायी देते है । सत्ती बाल बच्चों के साथ जीवित देखकर उसका मन आनंदीत होता है । अब माणिक आर.एम.एस.में तन्ना

के खाली जगह पर नौकरी करता है । इस कहानी के समापन के बाद लेखक (श्रोता) घर आता है । लेखक रात को एक स्वप्न देखता है ।

"चिमनी से निकलनेवाले धुएँ की तरह एक सतरंगा इन्द्रधनुष धीरे–धीरे उग रहा है । आकाश के बीचों–बीच आकर वह इन्द्रधनुष टँग गया है ।

एक जलता हुआ होठ, काँपता हुआ–दायीं ओर से इन्द्रधनुष की ओर खिसक रहा है ।

दायीं ओर माणिक का होठ , बायी ओर लीला का । खिसकते–खिसकते इन्द्रधनुष के नजदीक आकर दोनों रुक जाते है ।

नीचे धरती पर महेसर दलाल एक गाडी खींचते हुए आते है । गाडी चमन ठाकूर की भीख माँगनेवाली गाडी है । उसमें छोटे–छोटे बच्चे बैठे है । जमुना का बच्चा, तन्ना का बच्चा, सत्ती का बच्चा । चमन ठाकुर का एक कटा हुआ हाथ अन्धे अजगर की तरह आता है । बच्चों की गरदन में लिपट जाता है, मरोडने लगता है । उनका गला घुंटता है ।

इन्द्रधनुष के दोनों ओर प्यासे ओठ और नज़दीक आ जाते है ।

तन्ना के दोनों कटे हुऐ पैर राक्षसों की तरह झुमते हुऐ आते है । उनमें नयी लोहे की नालें जडी है । बच्चे उनसे कुचल जाते है । हरी घास दूर–दूर तक बरसात में साई किलों से कूचली हुई बीरबहूटियाँ फैली है । रक्त सुखकर गाढा काला हो गया है । इन्द्रधनुष की छाया तमाम पहाड़ो और मैदानों पर तिरछी होकर पड़ती है ।

माताएँ सिसकती है । जमुना, लिली, सत्ती । दोनों होठ इन्द्रधनुष के और समीप खिसकने लगते है – और समीप और समीप ।

एक काला चाकू इन्द्रधनुष को रस्से की तरह काट देता है । दोनों होठ गोश्त के मुरदा लोथडो की तरह पडते है ।

चीलें..... चीले..... टिडिड्डियों की तरह अनगिनत चिलें ।"[13]

इस स्वप्न में निम्न–मध्यवर्ग का यथार्थ, वास्तव प्रतिबिम्ब दिखायी देता है । भारतीजीने अपने बौद्धिक कौशल्य से इस स्वप्न को सँजोया है । इस स्वप्न में प्रतीक भी मध्यवर्गीय वस्तुओं को लिया गया है ।

1.	चिमनी, धुआं, संतरंगा इन्द्रधनुष	– मध्यवर्ग की प्रेम भावनाएँ ।
2.	आकाश के बीचों बीच आकर इन्द्रधनुष ढंग जाना और जलता, कॉंपता हुआ ओठ इन्द्रधनुष के समीप खिसकना	– माणिक और लिली का अतृप्त प्रेम, आधारहीन है ।
3.	चमन ठाकुर का कटा हाँथ अजगर की तरह बच्चों की गरदन में लिपट जाना	– क्रूर, अत्याचारी लोगों का प्रतिक ।
4.	भीख माँगनेवाली गाडी मे जमुना, तन्ना ओर सत्ती के छोटे–छोटे बच्चे बैठना	– मध्यवर्ग के सभी बच्चे भविष्य हीन होते है, जैसा कि जमुना तन्ना और सत्ती के बच्चे है ।
5.	लोहे की नाले जड़े युक्त तन्ना के कटे पैरों का राक्षसों की तरह झुमना	– तन्ना का अतृप्त मन, भुखा होकर भटकता है । तो कटे पैर के प्रतिक है, उनमें छटपटाहट है ।
6.	कुचले हुऐ बीरबहुटियों के बच्चे	मध्यम वर्ग कुचला हुआ रूप प्रकट होता है ।
7.	काला चाकू इन्द्रधनुष के रस्से को कॉटना	युवा–युवतियों के प्रणय, इच्छाओंमें समाज की रुढियाँ बाधक होती है ।
8.	चिलें, टिड्डियों	मध्यवर्ग का प्रणय, और भविष्य छीना हुआ है ।

इसप्रकार यह स्वप्न निम्न, मध्य वर्ग के कटु यथार्थ को स्पष्ट करता है । यहा मध्य वर्ग के आन्तरिक मन का उद्घाटन हुआ है ।

धर्मवीर भारतीजी के स्वप्नों का हिन्दी उपन्यास साहित्य में महत्व है । इन स्वप्नों उपन्यास के कथ्य और शिल्प को गति देने का कार्य किया है । पात्रों के मन का द्वन्द्व, अतृप्त लैगिंक ईच्छाएँ अनायास व्यक्त हुयी है । इन स्वप्नों में । मध्यमवर्गीय समाज का दर्पण प्रतिबिम्बीत होता है ।

स्वप्न सत्य के परिचायक, मानसिक तथा वर्तमान का ज्ञान और भविष्य की सुचना हमें स्वप्नों से मिली है, जिससे अपना भविष्य सुधारने में सहायता होती है ।

अतः "गुनाहों का देवता" के स्वप्नों में मनोविज्ञान आया है । तो "सुरज का सातवाँ घोडा" के स्वप्नों में मनोविज्ञान अधिक स्पष्ट नहीं हुआ है ।

नि ष्क र्ष

धर्मवीर भारती का "गुनाहों का देवता" उपन्यास स्वप्न मनोवैज्ञानिक दृष्टीसे सफल माना जाता है । इसमें आए हुऐ स्वप्नों ने उपन्यास के कथ्य को अधिक सुक्ष्म एवं गहरा बनाया है । इन स्वप्नों ने उपन्यास के शिल्प को विशिष्ट गती दी है । ये स्वप्न पात्रों के मानसिक द्वन्द्व, मन में छीपि अतृप्त ईच्छाएँ, पात्रों के आन्तरिक दर्शन के साथ-साथ बाहय दर्शन भी दिखाते है । उपन्यासकारने स्वप्नों के माध्यम से नायक चन्दर के मन में छीपा भावना और वासना का द्वन्द्व दिखाया गया है । इस उपन्यास के स्वप्न आदर्शवाद के खण्डन के लिए आए है ।

धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास "सूरज का सातवाँ घोडा" शिल्पप्रधान उपन्यास है। इसमें आए हुऐ स्वप्नों ने शिल्पपर अपना प्रभाव दिखाया है । स्वप्न के द्वारा निम्न-मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ नंगा रुप प्रकट किया है । इन स्वप्नों ने पात्रों के अवचेतन मन को गहराईयों में ये स्वप्न पात्रों के मन की दमित कामवासनाएँ व्यक्त करते है । इन स्वप्नों में भूत, वर्तमान एवं भविष्य के घटनाओं की सूचना मिलती है । इन स्वप्नों में निम्न-मध्यवर्गीय समाज के पात्रों की अनेक समस्याएँ दिखायी देती है । इस उपन्यास के स्वप्न यथार्थवाद के खण्डन के लिए आए है ।

उपन्यासकारने दोनों ही उपन्यास में स्वप्न ओर मनोविज्ञान का अटूट सम्बन्ध दिखाया है । पात्रों के मन की अतृप्त लैगीक इच्छाएँ, मन का भय, साथ ही वर्तमान द्वन्द्व दिखाया गया है । उन्होने निम्न-मध्यवर्गीय समाज की समस्याएँ प्रकट करने के लिए प्रतिकों का सुन्दर प्रयोग किया है । अतः उपन्यासों के स्वप्न फ्रायड, एडलर, ज्यूँग के सिध्दान्तो का प्रतिपादन करते है ।

स न्द र्भ

1.	डॉ. कैलाश जोशी	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में स्वप्न–मनोविज्ञान	पृ. 222 ।
2.	वही	वही	पृ. 1 ।
3.	हरीमोहन शर्मा	स्वप्न लोक	पृ. 7 ।
4.	कविराज विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	पृ. 128 ।
5.	डॉ. कैलाश जोशी	आधुनिक हिन्दी उपन्यासोमें स्वप्न मनोविज्ञान	पृ. 221 ।
6.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 80 ।
7.	वही	वही	पृ. 81 ।
8.	वही	वही	पृ. 156 ।
9.	वही	वही	पृ. 157 ।
10.	डॉ. कैलाश जोशी	धर्मवीर भारती : उपन्यास साहित्य	पृ. 86–87 ।
11.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 212–213 ।
12.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 58 ।
13.	वही	वही	पृ. 96 ।